राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यौ अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अजान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप-समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वंदौ पाँचों परमगुरु सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसौं जिनपद नमों, नमों शारदा साय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यौ पाठ सुखदाय॥२२॥